अक्रम यूथ

अगस्त 2021 हिन्दी

दादा भगवान परिवार

अनुक्रमणिका

04 भीष्म प्रतिज्ञा

08 अनुभव

10 ब्रह्मचर्य का प्रताप

12 भीष्म के गुरु

14 ज्ञानी विद् यूथ

16 नंदिनी गाय की चोरी का कर्मफल

18 पूर्वजन्म के कर्म

20 अक्रम पीडिया

22 Puzzle

23 #कविता

अगस्त 2021

वर्ष : 9, अंक : 4

अखंड क्रमांक : 100

संपर्क सूत्र :

ज्ञानी की छाया में,

त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,

अहमदाबाद-कलोल हाइवे,

मु.पो. - अडालज,

जिला : गांधीनगर-382421, गुजरात

फोन : (079) 39830100

email: akramyouth@dadabhagwan.org

website: youth.dadabhagwan.org

store.dadabhagwan.org

संपादक : डिम्पल मेहता

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj - 382421.

Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by : Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj - 382421.

Taluka & Dist - Gandhinagar

Published at : Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj - 382421.

Taluka & Dist - Gndhinagar

Printed at : Amba Multiprint

B-99, GIDC, Sector-25,

Gandhinagar – 382025. Gujarat.

Total 24 Pages with Cover page

Subscription

Yearly Subscription

India :200 Rupees

USA: 15 Dollars

UK: 12 Pounds

5 Years Subscription

India : 800 Rupees

USA: 60 Dollars

UK: 50 Pounds

In India, D.D. / M.O. should be drawn in favour of "Mahavideh Foundation" payable at Ahmedabad.

© 2021, Dada Bhagwan Foundation.

All Rights Reserved

संपादकीय

प्रिय मित्रों,

प्राचीन युग के सुप्रसिद्ध ग्रंथ महाभारत और उसके पात्रों से हम सभी अच्छी तरह से परिचित हैं। महाभारत की कथा भीष्म पितामह, विदुर, पाँच पांडव, कौरव, श्री कृष्ण, कर्ण, अर्जुन, आचार्य द्रोण, कुलगुरु कृपाचार्य... जैसे अनेक पात्रों से भरी पड़ी है। इन सभी पात्रों की अपनी मौलिक विशेषताएँ हैं। यदि इन महान पुरुषों के जीवन चरित्र को यथार्थ रूप से समझा जाए तो वह हमें जीवन में उपयोगी साबित होगा।

ऐसे उम्दा उद्देश्य के साथ हमारे प्रिय अक्रम यूथ के इस अंक में महाभारत के इन महान पुरुषों में सब से अग्रणी भीष्म पितामह का परिचय देने का और उनके जीवन के महत्वपूर्ण प्रसंगों का वर्णन करने का प्रयास किया गया है।

आपके मन में सवाल उठेगा कि भीष्म पितामह ही क्यों? जबकि महाभारत की कथा में अन्य कितने ही प्रभावशाली पात्र हैं। लेकिन मित्रों, जीवन में हर क्षेत्र में सफलता पाने के लिए आवश्यक गुणों से संपन्न भीष्म पितामह का व्यक्तित्व सब से निराला है। वे कुरु साम्राज्य के एक अजेय योद्धा, विद्वान, कुशल राजनीतिज्ञ, सत्य और धर्म के समर्थक और अन्य असंख्य गुणों से संपन्न एक मजबूत स्तंभ के समान हैं।

आशा है कि ऐसे कई प्रतिभा से युक्त महापुरुष को समर्पित यह अंक आपको रुचिकर और रोमांचक लगेगा और साथ ही जीवन में प्रेरणादायक साबित होगा।

- डिम्पल भाई मेहता

भीष्म प्रतिज्ञा

युवराज देवव्रत अपनी भीषण प्रतिज्ञा के कारण भीष्म के नाम से प्रख्यात हुए।

"मैं गंगापुत्र देवव्रत, चारों दिशाएँ, धरती और आकाश को साक्षी मानकर आज यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं आजीवन ब्रह्मचारी रहूँगा। आजीवन विवाह नहीं करूँगा। वंशहीन ही जीऊँगा और वंशहीन ही मरूँगा। यह मेरी अखंड प्रतिज्ञा है।"

उन्होंने यह प्रतिज्ञा तो ले ली, लेकिन उस पर अडिगता से टिके रहने में कितने ही चैलेंजिस का सामना करना पड़ा! निष्ठापूर्वक प्रतिज्ञा का पालन करने के लिए असंख्य अपमान सहन करने के बावजूद भी वे अपने दिए गए वचन को ज़िम्मेदारी से निभाकर इतिहास में अमर हो गए...

चलो जानें, उनके जीवन में घटित कुछ बोधदायक प्रसंग

प्रसंग 1

देवव्रत, जो अपनी भीष्म प्रतिज्ञा के कारण इतिहास में 'भीष्म पितामह' के तौर पर प्रख्यात हुए, वे शांतनु और गंगा के पुत्र थे। वे जब हस्तिनापुर आए तब उनके पिता शांतनु के अलावा सभी खुश दिखाई दे रहे थे। देवव्रत अपने पिता के दुःख का कारण ढूँढते हैं। पता चलता है कि पिता शांतनु, सत्यवती नामक एक मत्स्य कन्या से प्रेम करते हैं और उससे विवाह करने के लिए आतुर हैं। सत्यवती के पिता इस विवाह के विरुद्ध थे इसलिए देवव्रत तुरंत ही सत्यवती के पिता से मिलने जाते हैं।

देवव्रत : हे निषादराज! मैं आपके पास एक कामना लेकर आया हूँ। 'आपकी पुत्री सत्यवती का हाथ मेरे पिता शांतनु को सौंप दें और उन्हें विवाह करने की अनुमति दें।'

पिता : हे गंगापुत्र देवव्रत! यदि आप मुझे विश्वास दिलाएँ कि सत्यवती को राजमाता का सम्मान मिलेगा और मेरी पुत्री की कोख से जन्म लेने वाला पुत्र ही हस्तिनापुर की गद्दी पर बैठेगा तो ही मैं विवाह की अनुमति दूँगा। लेकिन जब तक आप हस्तिनापुर में हैं तब तक यह संभव नहीं है।

एक क्षण का भी विलंब किए बगैर देवव्रत विश्वास दिलाते हुए कहते हैं...

देवव्रत : हम दोनों ही मेरे पिता के जीवन में रहेंगे। सुनिए निषादराज! यदि यही कारण है तो, मैं गंगापुत्र देवव्रत इसी क्षण यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि **मैं आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करूँगा और मैं आजीवन हस्तिनापुर की राजगद्दी पर नहीं बैठूँगा।** हस्तिनापुर की राजगद्दी पर बैठे हुए राजा का सेनापति बनकर मेरे अंतिम श्वास तक सारी ज़िम्मेदारी निभाऊँगा।

प्रसंग 2

इसके बाद सत्यवती के पिता खुश होकर विवाह की अनुमति देते हैं। गंगापुत्र देवव्रत की ऐसी भीष्म प्रतिज्ञा की गहनता और महानता जानकर माता सत्यवती और शांतनु देवव्रत पर बहुत प्रसन्न होते हैं और प्रसन्न होकर उसे 'भीष्म' नाम देते हैं।

लेकिन देवव्रत द्वारा ली गई इस कठिन प्रतिज्ञा के कारण वे मन ही मन चिंतित भी रहते हैं, इसलिए वे दोनों एक दिन भीष्म को प्रतिज्ञा तोड़ने के लिए कहते हैं।

शांतनु और सत्यवती : बेटा भीष्म! अब तो तुम्हारी इच्छा अनुसार हो गया है। अब ऐसी भीष्म प्रतिज्ञा की कोई ज़रूरत नहीं है, तुम इस प्रतिज्ञा को तोड़ डालो।

भीष्म : नहीं माता, यह संभव नहीं है। **चाहे कैसे भी संयोग आएँ फिर भी यह प्रतिज्ञा अब नहीं टूटेगी।**

प्रसंग 3

सालों गुजरते जाते हैं। समय बीतते महाराज शांतनु की मृत्यु हो जाती है। उनकी दो संतान-चित्रांगद एवं विचित्रवीर्य। बड़े पुत्र चित्रांगद की भी मृत्यु हो जाती है। विचित्रवीर्य बहुत छोटा होने के कारण अब गद्दी पर कौन बैठेगा ऐसा प्रश्न उठता है। तब फिर से उन पर दबाव डाला जाता है।

सत्यवती : भीष्म, मेरा निवेदन है कि अब तुम अपनी प्रतिज्ञा तोड़ डालो और हस्तिनापुर की गद्दी संभालो।

भीष्म : माता, मैं आपकी व्यथा समझता हूँ लेकिन **एक बार ली हुई प्रतिज्ञा मैं नहीं तोड़ सकता हूँ।** विचित्रवीर्य के बड़े होने तक मैं सारी ज़िम्मेदारी निभाऊँगा लेकिन इस गद्दी का हकदार हम विचित्रवीर्य को ही बनाएँगे। आज्ञा दीजिए माता!

प्रसंग 4

उचित समय पर भीष्म विचित्रवीर्य को राजगद्दी पर बिठते हैं। काशी नरेश अपनी तीन पुत्रियों अंबा, अंबिका और अंबालिका के स्वयंवर में विचित्रवीर्य को आमंत्रण नहीं भेजते हैं लेकिन माता की इच्छा उन तीनों पुत्रियों का विवाह विचित्रवीर्य से करवाने की है। काशी नरेश से अपमान का बदला लेकर माता को खुश करने के लिए भीष्म तीनों कन्याओं का अपहरण कर लेते हैं।

तीनों कन्याओं में से अंबा ने मन ही मन शाल्व राजा को अपना पति मान लिया था। इसलिए वह बहुत क्रोधित होती है और भीष्म से बदला लेने का तय करती है। वह भीष्म के गुरु परशुराम को अपनी आपबीती सुनाकर मदद माँगती है। भीष्म के कारण अंबा के साथ ऐसा हुआ इसलिए परशुराम भीष्म को बुलाते हैं। अब आगे...

परशुराम : भीष्म, तेरे दृष्कृत्य के कारण अंबा की ऐसी खराब हालत हुई है। आज मैं तुम्हें

आदेश देता हूँ कि तुम प्रतिज्ञा तोड़कर अंबा के साथ विवाह करो और अगर ऐसा नहीं करना चाहते हो तो मेरे साथ युद्ध करो।

भीष्म : प्रणाम गुरुजी! **मैं आपके युद्ध के आहवान को स्वीकार करता हूँ क्योंकि अपनी अंतिम श्वास तक मैं अपनी प्रतिज्ञा नहीं तोडूँगा।**

भीष्म अपने गुरु परशुराम के साथ युद्ध करते हैं लेकिन अपनी प्रतिज्ञा को तोड़ते नहीं हैं। ऐसी अटूट, अटल, अडिग थी भीष्म की प्रतिज्ञा!

चलो देखें, दादाजी दृढ़ निश्चय के बारे में क्या कहते हैं?

दृढ़ निश्चय पहुँचाए पार

प्रश्नकर्ता : कैसा निश्चय करना चाहिए?

दादाश्री : हमने जो निश्चय किया हो, उसी तरफ जा सकते हैं। आत्मा अनंत शक्ति स्वरूप है, वह शक्ति प्रकट हो जाएगी। आत्मा निश्चय स्वरूप है, और आपको निश्चय करने की ज़रूरत है। डगमग डगमग नहीं चलेगा! एक ही स्ट्रोंग अभिप्राय ज़िंदगी भर त्याग करवाता है! अभिप्राय थोड़ा सा भी कच्चा रह जाए तो उससे क्या होगा? जब कर्म के उदय आएँगे तो फिर इंसान का कुछ भी नहीं चलेगा, फिर वह स्लिप हो जाएगा। अरे, शादी तक कर लेगा!

अनुभव

जय सच्चिदानंद...

बचपन में मैं "महाभारत" का बड़ा प्रेमी था। खासतौर पर वह दृश्य जहाँ भीष्म पितामह प्रतिज्ञा लेते हैं। महाभारत के इस पात्र से मैं बहुत प्रभावित हुआ। भीष्म को अपना आदर्श मानकर उनके जैसा शुद्ध ब्रह्मचारी बनने की मैंने इच्छा की। एक ब्रह्मचारी के तौर पर मुझे यह कहना ही पड़ेगा कि मेरा ब्रह्मचर्य का निश्चय सब से पहले भीष्म के पात्र को देखकर ही हुआ था।

मेरे कुछ ब्रह्मचारी मित्र हैं, उन्हें भी ब्रह्मचर्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा भीष्म के संकल्प को देखकर मिली थी! आज तो अनेक दादाई युवा नीरू माँ और पूज्यश्री के शील को देखकर आजीवन ब्रह्मचर्य के ध्येय की ओर दृढ़ता से आगे बढ़ रहे हैं!

भीष्म एक रोल मॉडल, सुपर हीरो थे और मैं उनके जैसा बनना चाहता था। उनका अनुसरण करके सचमुच मैं ज्यादा अच्छा इंसान बना। उत्कृष्ट ध्येय के साथ-साथ राष्ट्र प्रेम, दृढ़ निश्चय और उसे पूरा करने के लिए अडिग पुरुषार्थ शायद ही कहीं देखने मिले! कैसे माता-पिता के विनय में रहना चाहिए? कैसे दृढ़ता और संकल्प के साथ बोलना? कैसे औरों के कल्याण के बारे में हमेशा सोचना? ऐसे कई सद्गुणों के कारण कब वे मेरे आदर्श बन गए, पता ही नहीं चला!

शिक्षक के प्रति विनय दर्शाती हुई उनकी एक बात तो मुझे बहुत छू गई...

जब परशुराम ने भीष्म को अपने साथ युद्ध करने के लिए कहा तब वे परशुराम के पास गए और उनसे आर्शीवाद माँगा। गुरु परशुराम उनके विनय से इतने प्रभावित हुएँ कि उन्होंने युद्ध में विजयी होने का आशीर्वाद दिया।

हे भीष्म पितामह! कई लोग, खासतौर पर ब्रह्मचारियों के लिए आप जो प्रेरणा के स्त्रोत बने, उसके लिए आपका बहुत-बहुत आभार। कहना ही पड़ेगा, निश्चय हो तो भीष्म पितामह जैसा हो!

संस्कृत में **भीष्म** शब्द का अर्थ है, *'जो एक कठोर व्रत लेता है और उसे पूर्ण करता है।'*

उनके अन्य नाम नीचे दिए गए अनुसार हैं -

देवव्रत - भीष्म का असली नाम, जिसका अर्थ है, 'जो देवताओं को समर्पित है।'

पितामह - दादा (पांडव और कौरव उन्हें भीष्म पितामह कहते थे)।

शान्तनव - शांतनु के पुत्र, पिता के लिए ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा लेने के कारण उनका यह नाम पड़ा।

श्वेतवीर - एक श्वेत योद्धा, जो सफेद एवं शूरवीर हैं और जिनके सारे शस्त्र सफेद रंग के हैं।

अष्ट वसु - जो असल में पिछले जनम में देवता थे।

गंगापुत्र/गांगेय - गंगा के पुत्र।

गंगादत्त - गंगा द्वारा दिया गया नाम।

भरतवंशी - भरत का वंशज।

गौरांग - उत्तम शरीरधारी।

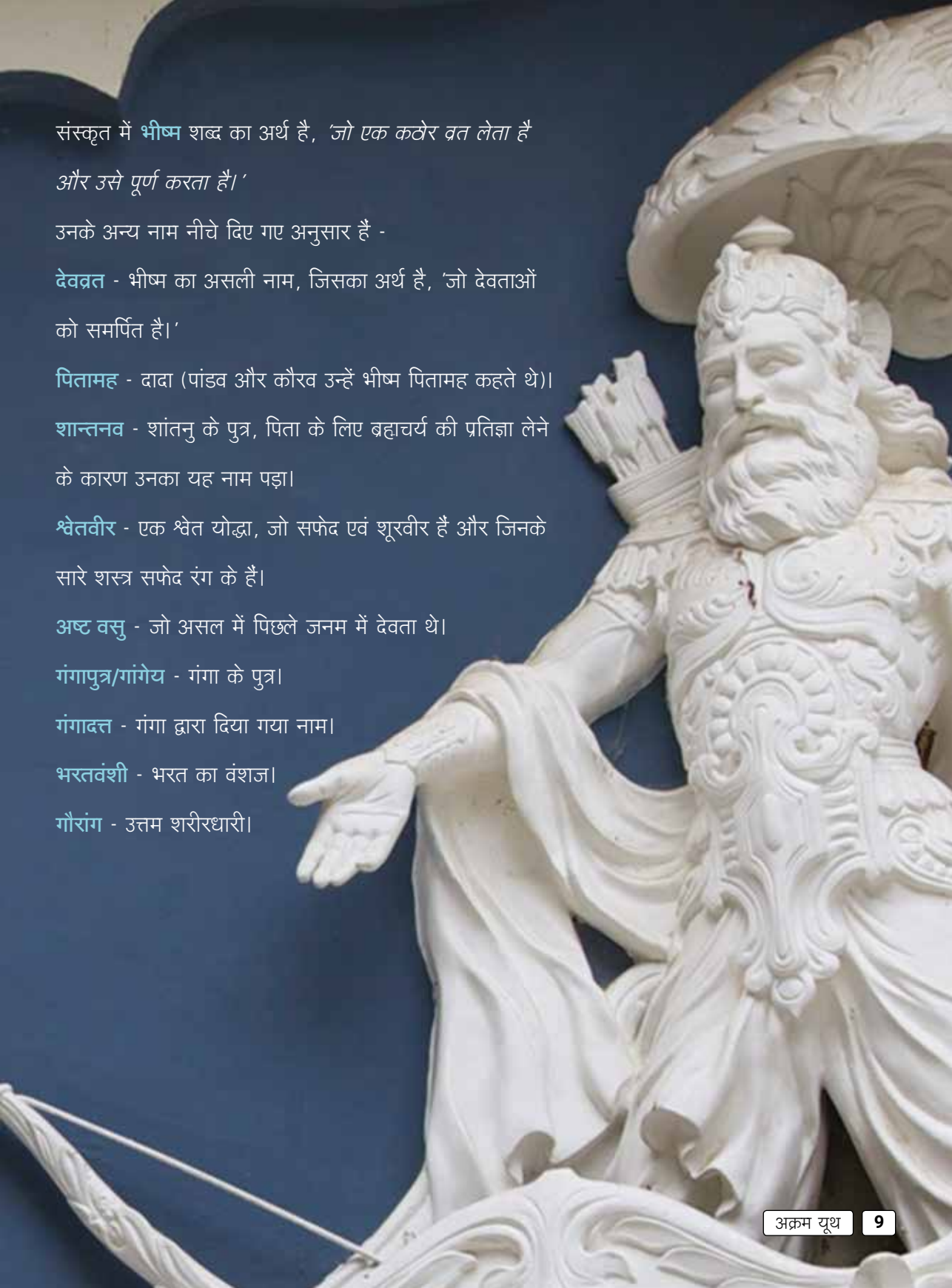

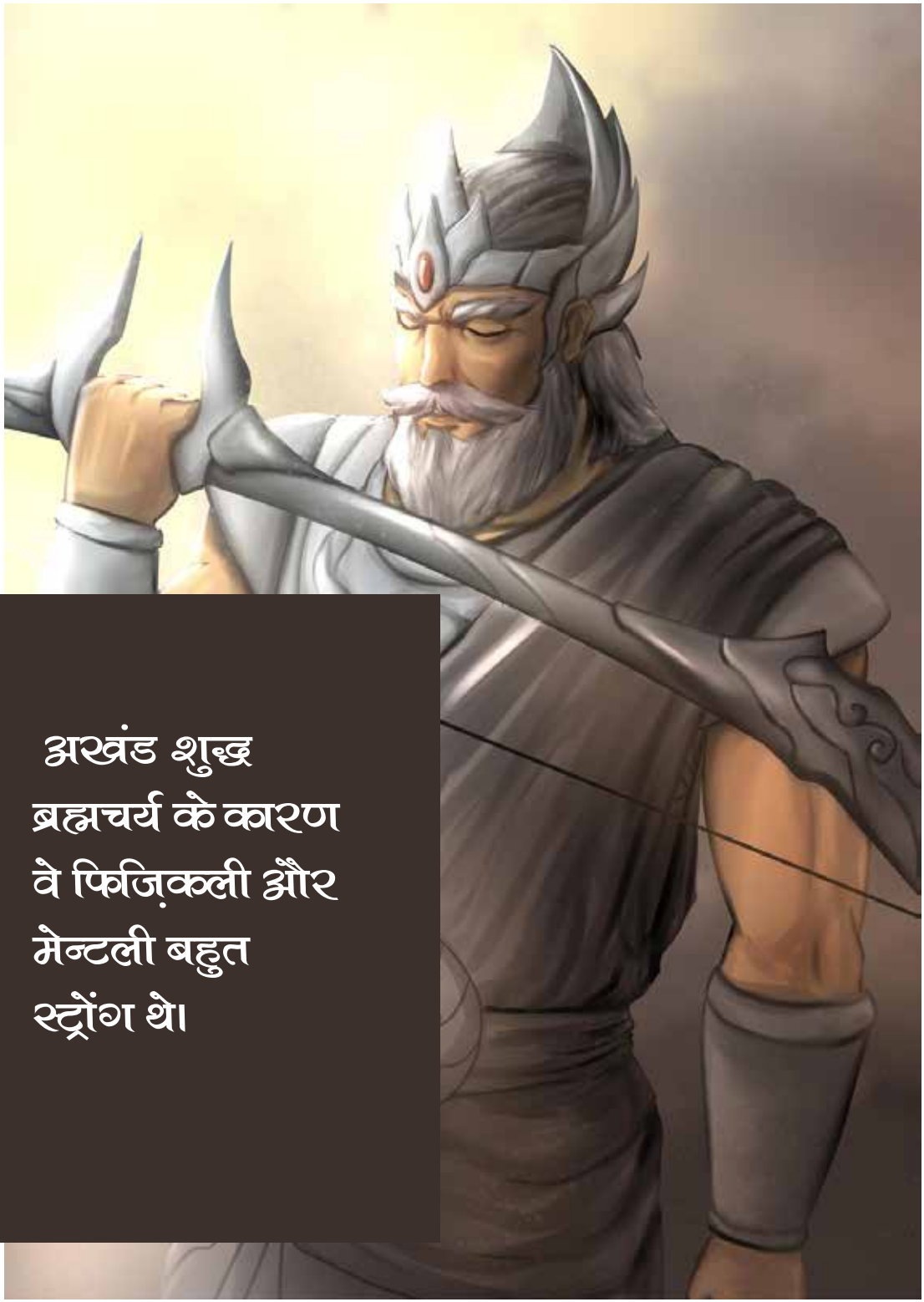

अखंड शुद्ध ब्रह्मचर्य के कारण वे फिज़िक्ली और मेन्टली बहुत स्ट्रोंग थे।

ब्रह्मचर्य का प्रताप

हम जो भोजन खाते हैं, उसका खून बनता है। खून की सात धातुएँ बनती हैं और उसमें से फिर अंत में वीर्य बनता है। यों भोजन का सार वीर्य कहलाता है। जगत् की सभी चीज़ें अधोगामी हैं। सिर्फ वीर्य ही ऐसा है जो अगर चाहें तो उर्ध्वगामी हो सकता है। वीर्य के परमाणु सूक्ष्म रूप में ओजस में परिणामित होते हैं। निश्चय करने के बाद चेहरे पर चमक आने लगती है, मनोबल बढ़ता जाता है, वाणी फर्स्ट क्लास निकलती है। वाणी मिठास वाली रहती है। वर्तन मिठास वाला रहता है। उससे देह, मन सब बढ़िया रहते हैं। अतः सिर्फ छः महीने ही जिसे पालन करना हो वह कर सकता है! छः महीने के ब्रह्मचर्य से तो शरीर में कितना परिवर्तन आ जाता है! फिर वाणी बोले वह बॉम जैसी निकलती है!

स्ट्रोंग ब्रह्मचर्य के कारण भीष्म पितामह बढ़ती हुई उम्र के साथ और ज्यादा शक्तिशाली होते गए और हस्तिनापुर की गद्दी संभालने के अपने ध्येय से निष्ठापूर्वक जुड़े रह सके। महाभारत के युद्ध में शुरुआती दस दिनों में तो उनके शौर्य की ही चर्चाएँ होती रहीं! वे वयोवृद्ध होने के बावजूद भी तेजस्वी और शक्तिशाली थे रोज़ पांडवों के दस हज़ार सैनिकों का संहार करने से उन्हें कोई रोक नहीं पाता था!

पिता शांतनु ने भीष्म को 'इच्छा मृत्यु' का वरदान दिया था। युद्ध के दसवें दिन भीष्म का पुरा शरीर बाणों से भर गया था। बाणों की शय्या पर उनकी अंतिम इच्छा हस्तिनापुर को सुरक्षित देखने की थी। अखंड शुद्ध ब्रह्मचर्य के कारण वे फिज़िकली और मेन्टली बहुत स्ट्रोंग थे। काफी समय तक बाणों की शय्या की पीड़ा सहन करते रहें और जब युधिष्ठिर हस्तिनापुर के राजा बने, जब हस्तिनापुर सुरक्षित हाथों में दिखाई दिया तब संपूर्ण संतोष के साथ उन्होंने 'इच्छा मृत्यु' के वरदान से देहत्याग किया।

भीष्म के गुरु

माता गंगा, देवव्रत को विविध क्षेत्रों में ले गई थीं, जहाँ उनकी परवरिश और तालीम बहुत प्रसिद्ध ऋषियों द्वारा हुई थी।

बृहस्पति

देवगुरु थे, उन्होंने देवव्रत को राजा के कर्तव्य, राजनीति और अन्य शास्त्र सिखाए।

शुक्राचार्य

असुरों के गुरु थे, उन्होंने देवव्रत को राजनीति और ज्ञान की अन्य शाखाएँ सिखाई।

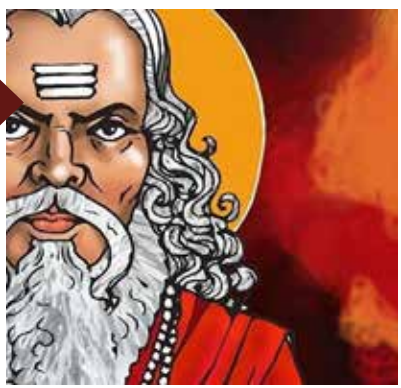

ब्रह्मर्षि वशिष्ठ ऋषि और भृगु ऋषि के पुत्र च्यवन

उन्होंने देवव्रत को वेद और वेदांग सिखाए।

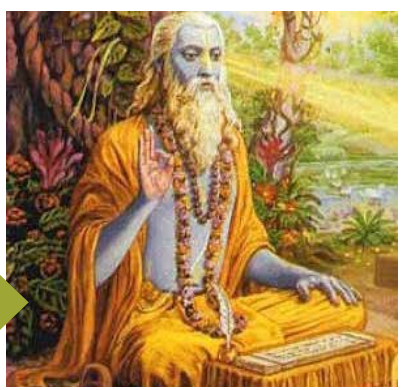

सनतकुमार

देवव्रत को मानसिक और आध्यात्मिक विज्ञान सिखाए।

मार्कन्डेय

देवव्रत को साधु जीवन के कर्तव्य सिखाए।

परशुराम

भीष्म को युद्ध की तालीम दी थी।

इन्द्र

देवों के राजा, उन्होंने भीष्म को दिव्य अस्त्र दिए थे।

नंदिनी गाय की चोरी का कर्मफल

ऋषि वशिष्ठ, वरूणदेव के पुत्र थे। मेरू पर्वत पर उनका आश्रम था। हमेशा हराभरा और पशु-पक्षियों से युक्त मेरू पर्वत पर वे अपनी तपस्या में मग्न रहते थे। उनके पास नंदिनी नामक की एक दिव्य गाय थी, जो धार्मिक और तपस्या से जुड़ी कोई भी इच्छा पूरी कर सकती थी। वशिष्ठ ऋषि की सुरक्षा के कारण नंदिनी मुक्त एवं निर्भय होकर जंगलों के आसपास घूमती रहती थी।

एक दिन आठ वसु अपनी पत्नियों के साथ इस जंगल में ऊतरे। भव्य जंगल की प्रशंसा करते हुए जब वे आसपास टहल रहे थे तब द्यो नामक वसु की पत्नी की नज़र नंदिनी पर अटक गई। शुभ लक्षणों एवं चिन्हों से युक्त, विशेष प्रकार के देह की बनावट वाली गाय देखकर उसे उसके बारे में ज्यादा जानने की इच्छा हुई। द्यो ने उसे बताया कि जो भी नंदिनी का मीठा दूध पीता है वह दस हज़ार वर्ष तक जवान रहता है। यह सुनकर तुरंत ही उसने अपने पति से गाय को लाने के लिए ज़िद्द भरी विनती की।

नंदिनी गाय ऋषि वशिष्ठ की सेवा में है यह जानते हुए भी द्यो अपनी पत्नी की विनती पर पसीज गए। पत्नी को खुश करने के लिए उन्होंने भाइयों की मदद से गाय की चोरी की। अपनी पत्नी के प्रेम के वश होकर ऋषि की गाय की चोरी तो कर ली लेकिन इस पाप से होने वाले परिणाम को वह भूल गए।

यह गुनाह करने के कारण वह स्त्रीसंग एवं संतान से वंचित रहेगा लेकिन सभी प्रकार से बहुत ही सज्जन एवं उम्दा व्यक्ति होगा,

शाम को जब वशिष्ठ ऋषि अपने आश्रम लौटे तब उन्हें गाय नहीं दिखी। अपनी अलौकिक दृष्टि से वे जान गए कि वसुओं ने नंदिनी गाय की चोरी की है। क्रोध से आवेश में आकर उन्होंने वसुओं को श्राप दिया कि अपने पाप का प्रायश्चित करने के लिए उन्हें पृथ्वी पर जन्म लेना पड़ेगा।

श्राप का पता चलते ही वसु, ऋषि वशिष्ठ को शांत करने के लिए दौड़े चले आए। बहुत प्रयत्न करने के बाद ऋषि शांत हुए। उन्होंने श्राप को हल्का करते हुए कहा, 'पृथ्वी पर उनके जन्म के एक साल के अंदर ही आठ में से सात वसु नश्वर जीवन से मुक्ति पाएँगे लेकिन प्रमुख गुनहगार द्यो के लिए श्राप यथावत् रहेगा।' ऋषि ने कहा, 'द्यो को दीर्घकाल तक पृथ्वी पर रहना पड़ेगा। अपनी पत्नी के पागलपन में आकर यह गुनाह करने के कारण वह स्त्रीसंग एवं संतान से वंचित रहेगा लेकिन सभी प्रकार से बहुत ही सज्जन एवं उम्दा व्यक्ति होगा, बहुत यश पाएगा।'

इस तरह से गंगा के प्रथम सात पुत्र, सात वसु थे जिन्हें जन्म के बाद तुरंत ही नश्वर जीवन से मुक्ति मिल गई। आठवाँ पुत्र जो कि द्यो का पुनर्जन्म था, उसे देवव्रत गंगापुत्र भीष्म के तौर पर दीर्घकाल तक पृथ्वी पर रहकर नंदिनी गाय की चोरी का कर्मफल भुगतना पड़ा।

चलो देखें, चोरी के बारे में पूज्यश्री क्या कहते हैं...

ज्ञानी विद् यूथ

प्रश्नकर्ता : पूज्यश्री, चोरी करने का फल क्या मिलता है? और यदि कभी चोरी की हो तो उसमें से कैसे छूटा जाए?

पूज्यश्री : इसमें कैसा है कि जब हम किसी और का नुकसान करते हैं न तब वास्तव में हम अपना ही नुकसान करते हैं। जब नुकसान होता है तब कहते हैं, 'मेरे जीवन में ऐसा क्यों हुआ?' लेकिन गुनाह किया हो तो फिर दंड भी मिलता है। दादा भगवान कहते हैं कि मन-वचन-काया से जो चोरी करता है उस पर लक्ष्मी जी मेहरबान नहीं रहतीं। इस जनम में शायद रहें क्योंकि पिछले जनम का पुण्य इस जनम में काम आ जाएगा। लेकिन आज खुश होकर चोरी करने से अगले जनम में बड़ा नुकसान होगा। आज कई लोगों को नौकरी नहीं मिलती, व्यापार में लाभ नहीं मिलता है क्योंकि ऐसे गुनाह किए हैं।

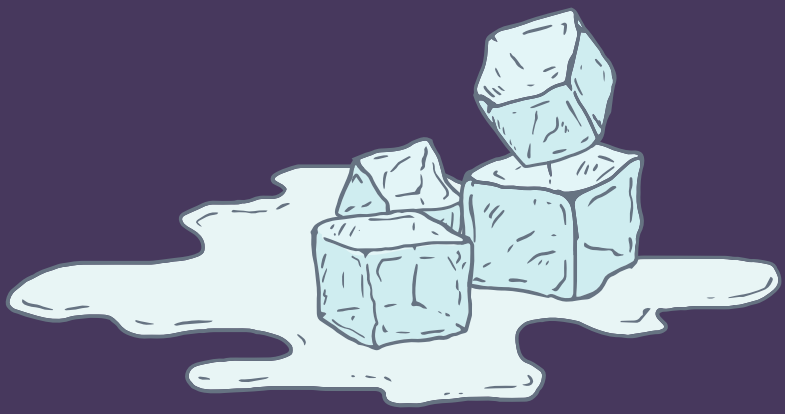

अतः अब ऐसा तय कर लेना चाहिए कि मन-वचन-काया से चोरी नहीं करनी है, किसी को धोखा नहीं देना है, किसी का नुकसान नहीं करना है। भले ही आमदनी कम हो या खाने-पीने के लिए कम मिले, फिर भी अब ऐसे गुनाह नहीं करने हैं। तो फिर धीरे-धीरे व्यापार में और कामकाज में नफा होगा। समझ में आया न? सभी का नुकसान करके मुफ्त में मिले हुए पैसे टिकते नहीं हैं।

प्रश्नकर्ता : हैकर बनकर कम्प्यूटर के द्वारा बैंक के खाते में से पैसे निकाल लेते हैं, उसका क्या फल मिलता है?

पूज्यश्री : रास्ते पर से बर्फ चोरी करके लाए हों तो बर्फ टिकेगा क्या? बर्फ पिघल जाएगा, चोरी का गुनाह सिर पर आएगा। जिससे बाद में मार पड़ता है अच्छे से! ये सब जो गलत तरीके से पैसे ले लेते हैं, हैकर बनकर कम्प्यूटर के द्वारा बैंक के खाते में से पैसे निकाल लेते हैं, तो सामने वाले को कितना दुःख होता है! बेचारे ने मेहनत करके सेविंग में पैसे रखे हों, और कोई धोखा देकर उसके पैसे निकाल ले! उसकी पूरी ज़िंदगी की पूँजी हम गलत तरीके से चोरी कर लें, कितना बड़ा नुकसान होगा! अतः तय करो कि ज़िंदगी में गलत काम नहीं करने हैं और अगर गलती से हो जाएँ तो बहुत पछतावा करूँगा। यदि सौ-दो सौ-पाँच सौ की चोरी की हो तो उसमें डबल पैसा जोड़कर दान कर दें या फिर उसके मालिक को दे दें कि 'भाई, यह मेरी तरफ से गिफ्ट है।' चोरी बहुत बड़ा गुनाह है।

जो गलत तरह से चोरियाँ करके मज़ा करता है उसे दूसरा जनम जानवर का मिलता है और खाने का भी ठिकाना नहीं रहता। या मनुष्य जनम मिले तो नौकरी-धंधे का ठिकाना नहीं रहता और बहुत दुःख पड़ते हैं। समझ में आया न?

तय करो कि ज़िंदगी में गलत काम नहीं करने हैं और अगर गलती से हो जाएँ तो बहुत पछतावा करूँगा। यदि सौ-दो सौ-पाँच सौ की चोरी की हो तो उसमें डबल पैसा जोड़कर दान कर दें या फिर उसके मालिक को दे दें कि 'भाई, यह मेरी तरफ से गिफ्ट है।' चोरी बहुत बड़ा गुनाह है।

भुगतना
तो पड़ेगा ही...

अपनी अनोखी आंतरिक सूझ के कारण भीष्म, श्री कृष्ण भगवान के सच्चे स्वरूप को पहचान पाए थे। युद्ध क्षेत्र में बाणों की शय्या पर लेटे हुए भीष्म को जब श्री कृष्ण मिलने आए तब उन्होंने श्री कृष्ण से पूछा...

भीष्मः मेरे कौन से पाप कर्म के फलस्वरूप मुझे यह बाणों की शय्या पर सोना पड़ रहा है?

श्री कृष्णः आपके पिछले दस जन्मों के पहले के जन्म में आप एक राजकुमार थे और घोड़े पर एक वन से दूसरे वन में घूमते रहते थे। ऐसे ही जब आप एक बार वन में घूम रहे थे तब आपको रास्ते में एक साँप पड़ा हुआ मिला। आपने ज्यादा कुछ सोचे बगैर उस साँप को उठकर दूर फेंका। वह बेचारा जाकर काँटों से भरी झाड़ी में गिरा और वह जितना वहाँ से निकलने का प्रयत्न करता उतने ही ज्यादा काँटे उसके शरीर में घुसते गए। लगातार पीड़ा को सहन करते-करते साँप की मृत्यु हो गई। मृत्यु के समय साँप को अतिशय वेदना का दुःख सहन करना पड़ा, उसी कर्मफल के कारण आपको अंतिम समय में बाणों की शय्या की वेदना का दुःख सहन करना पड़ रहा है।

कर्मफल के सिद्धांत के अनुसार जाने-अनजाने किसी को भी दिए गए दुःख का परिणाम तो भुगतना ही पड़ता है...

अक्रमपीडिया

नाम : आयुष मेहता
उम्र : 21 वर्ष

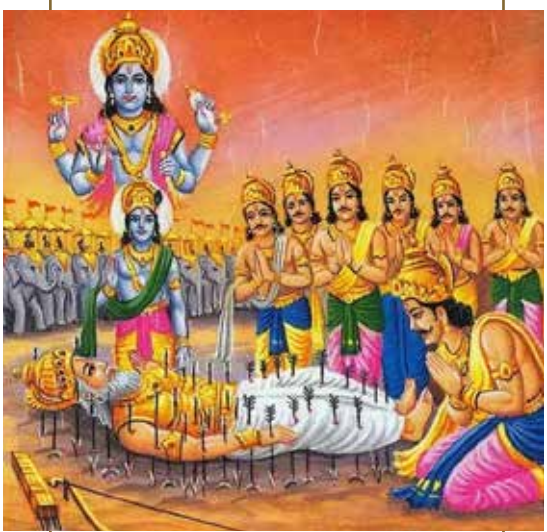

'मैनें अपने जीवन में जैसी गलतियाँ की है वैसी गलतियाँ तुम मत करना।' सुनो, मैं एक पराजित योद्धा हूँ।

आयुष ने टी.वी ऑन किया तो उस समय महाभारत का लास्ट सीन आ रहा था जिसमें भीष्म पितामह बाणों की शय्या पर अंतिम श्वास ले रहे थे और युधिष्ठिर से उनके जीवन से सीख लेने की बात कर रहे थे।

पितामह भीष्मः युधिष्ठिर, अब जब मेरा प्राण त्यागने का समय आ चूका है तब मैं तुमसे इतना ही कहना चाहता हूँ कि 'मैनें अपने जीवन में जैसी गलतियाँ की है वैसी गलतियाँ तुम मत करना।' सुनो, मैं एक पराजित योद्धा हूँ।

युधिष्ठिर! देश से बड़ा कुछ भी नहीं है। मेरी ही प्रतिज्ञा ने मुझे अपने देश से दूर कर दिया। इस प्रतिज्ञा के कारण मैं देशद्रोही बन गया। हस्तिनापुर के विभाजन का कारण भी मैं ही हूँ। मुझे लगा हुआ हर एक बाण मुझसे कह रहा है कि 'इस दुःख को पहचान। मैं एक ऐसा क्षत्रिय हूँ जो प्रतिज्ञा का दास बनकर रह गया।' अतः युधिष्ठिर! ऐसी कोई भी प्रतिज्ञा मत लेना जो तुम्हारे सामने कटार बनकर खड़ी रहे और तुम्हें देश से अलग कर दे। **देश राजा के लिए नहीं है, राजा देश के लिए है वह याद रखना।**

हे सम्राट युधिष्ठिर! धर्म, विधियों और औपचारिकता के आधीन नहीं है। धर्म तो हमारा कर्तव्य और दूसरों के अधिकारों का संतुलन करने में है। धर्म का पालन करना। राजा का फर्ज़ नागरिक के फर्ज़ से ज्यादा बड़ा है। तुम देश का विभाजन मत होने देना। जैसा मैनें किया वैसा तुम मत करना। नारी का सम्मान करना। नागरिकों का रक्षण करना।

आयुष पूरा संवाद सुनता है परंतु उसके मन में प्रश्न उठता है कि जीवन में क्या नहीं करना चाहिए वह कहना कितना कठिन है? ऐसी कैसी आलोचना!

फिर वह नीरू माँ द्वारा सत्संग में कहा गया 'आलोचना' के महत्व के बारे में पढ़ता है। साथ ही उसने मृत्यु के समय प्रतिक्रमण का महत्व दर्शाता नीरू माँ का एक वीडियो भी देखा...

नीरू माँ : बोलो, मरते-मरते भी उसे ऐसी भावना हुई, कितनी बड़ी चीज़ है! पूरी ज़िंदगी में खुद से चाहे जितने भी दोष हुए हों लेकिन मरने से पहले सिर्फ एक घंटा भी सच्चे हृदय से आलोचना-प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान करता है तो अंदर की पूरी परिणति बदल सकता है। किए गए सारे पाप धुल सकते हैं। क्योंकि मृत्यु से पहले संसार के सारे मोह दूर हो चूके होते हैं, तब आत्मशक्ति जबरदस्त पावर में आ गई होती है, शक्ति बहुत काम कर सके ऐसी है। इसलिए हम तो कई लोगों से कहते थे और कहते हैं कि भाई, मृत्यु के समय पूरे जीवन का लेखा-जोखा निकालना और जो भी पाप हो गए हों, उस समय उन सभी का हृदय से पश्चाताप करके धो डालना। वर्ना ये तो वही के वही कैरी फोरवर्ड होंगे और अपनी अधोगति होगी। और यह तो पश्चाताप से अंदर की परिणति बदल जाती है और उर्ध्वगति होती है। खून करने के बावजूद भी पश्चाताप करने से देवगति में जाता है।

नीरू माँ का वीडियो देखने के बाद आयुष को भीष्म पितामह की आलोचना की गहनता समझ में आई।

वह मन ही मन खुद को धन्य समझने लगा कि हमें दादाश्री ने अक्रम विज्ञान के माध्यम से जन्मों-जनम के फेरे से छूटने के लिए आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान के अचूक परिणाम मिलने वाले कैसे सुंदर और सरल उपाय बताए हैं!

PUZZLE

क	ग	भा	पि	म	बं	इ	का	च	पु	क	त
ली	र	तृ	प्रा	रा	कु	च्छा	बा	ध	बा	प	भो
द	भ	डी	क	तु	इ	मृ	का	बं	ण	स	पि
क्ति	ड़	का	बा	का	चा	त्यु	रा	ती	श	ग	ता
अ	ध	ली	ओ	ह	स्ति	ना	पु	र	य्या	र	म
नं	मा	नु	क	रा	र	व	क	नी	नि	दा	ह
त	मा	का	र्धा	ली	ए	गी	वि	ज	द	श्व	कु
वि	ब्र	ध	न	री	पु	क	प्र	न	बि	बं	य
ज	ह्या	क्रो	ध	ची	प्र	णे	म	भी	य	ती	ड़
य	च	का	म	आ	प्र	ति	डी	डी	ष्म	क	ण
ब	र्य	ग	ची	छी	का	क	ज्ञा	मा	हा	र	थी
दे	व	व्र	त	र	द	वा	र	गं	गा	पु	त्र

1 प्रतिज्ञा
2 ब्रह्मचर्य
3 तप
4 विनय
5 इच्छामृत्यु
6 पितृभक्ति
7 निश्चय
8 धनुर्धारी
9 महारथी
10 देवव्रत
11 हस्तिनापुर
12 पितामह
13 गंगापुत्र
14 भीष्म
15 वसु
16 अनंतविजय
17 बाण शय्या

#कविता

पूर्व भारतवर्ष में हो गए, एक वीर योद्धा महान...
सूरज लेकर ढूँढ़ने पर भी, कोई न मिले भीष्म समान...

जिनकी प्रतिज्ञा आज भी, दृढ़ निश्चय का प्रतीक है...
जिन्होंने दिखाया, शील संभालने वाला अति धनिक है...

जीवन जिनका, निस्वार्थ कर्म और कर्मफल की कथा है...
इतिहास में एक ही बार, लिखी गई शौर्य गाथा है...

सुवर्ण जैसा सत् होने पर भी, जीवन जिनका संघर्ष है...
खुद के लिए विचार तक नहीं, और राज्य का हित प्रथम है...

नीति-मति-विवेक-विनय जैसे, सद्गुणों की जो पोथी हैं...
फिर भी उनका पूरा जीवन, पश्चाताप में जलती ज्योति है...

सीखने जैसी सीख है, जो खुद पढ़ने योग्य शास्त्र हैं...
सद्गुणों की शय्या पर सोए, इतिहास में अनन्य पात्र हैं...

दादा के युवाओं द्वारा

अगस्त 2021
वर्ष : 9, अंक : 4
अखंड क्रमांक : 100

FOR A SURPRISE GIFT

Visit : www.AkramYouth.org Before 30th September 2021

SOLVE THE QUIZ. LUCKY WINNERS WILL GET FREE GIFTS.

Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org
Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.
Printed at : Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.